

अनाहुति स्त्री. (तत्.) 1. हवन का अभाव 2. जो हवन कहलाने के योग्य नहीं हो 3. अनुचित बलि या अर्घ्य।

अनाहूत वि. (तत्.) बिना बुलाया हुआ, अनिमंत्रित।

अनिंगित वि. (तत्.) [अन.+इंगित] 1. जो (विषय, वस्तु, तथ्य आदि) इंगित (स्पष्ट) न किया गया हो। 2. जो बिना किसी संकेत के बताया या कहा गया हो उदा. अनिंगित कथन।

अनिंदनीय वि. (तत्.) जो निंदा के योग्य न हो; निष्कलंक।

अनिंदित वि. (तत्.) जिसकी निंदा नहीं की गई हो, अकलंकित।

अनिंद्य वि. (तत्.) जो निंदा के योग्य न हो, निर्दोष, उत्तम, प्रशंसनीय।

अनिकेत वि. (तत्.) 1. स्थान-रहित, बिना घर का 2. संन्यासी, परिव्राजक 3. खानाबदोश, घूम-फिर कर अनियत स्थानों पर रहनेवाला।

अनिगमित वि. (तत्.) [अ+निगमित] 1. जिस (संस्था/कंपनी आदि) को विधि के अनुसार पूर्णरूप से निगम के रूप में स्थापित न किया गया हो जैसे- अनिगमित संस्था/विभाग 2. वह व्यक्ति या वर्ग जो विधि द्वारा स्थापित निगम (स्थायी संघ/संकाय) में सम्मिलित उसका भाग न हो।
unincorporate

अनिगीर्ण वि. (तत्.) [अ+निगीर्ण] 1. जिसे निगला गया न हो, अनिगीर्ण 2. जिसे खाया न गया हो 3. जो कहा गया न हो।

अनिग्रह पुं. (तत्.) 1. अनवरोध, बंधन का अभाव 2. दंड का न होना **वि.** (तत्.) 1. बंधनरहित 2. असीम, बेहद 3. अजेय 4. जिसे नियंत्रणाधीन रहने का दंड न दिया गया हो, अदंडित 5. जो दंड के योग्य न हो, अदंड्य।

अनिच्छ वि. (तत्.) [अन्+इच्छा] 1. जो किसी तरह की इच्छा ही न रखता हो, अभिलाषा रहित, निष्काम 2. क्रि.वि. अनिच्छ भोजन करना (बिना इच्छा के)

अनिच्छा स्त्री. (तत्.) इच्छा का अभाव, चाह न होना, अरुचि।

अनिच्छानुकरण पुं. (तत्.) [अनिच्छ+अनुकरण] बिना किसी इच्छा के किये जाने वाला अनुकरण मनो. मानव की एक मानसिक विकृति जब वह रुग्णावस्था में न चाहते हुए भी दूसरे लोगों की प्रवृत्तियों को देखकर उनका अनुकरण करने की चेष्टा करता है।

अनिच्छित वि. (तत्.) जिसकी इच्छा न हो, अनचाहा, अनभीष्ट, अनभीप्सित।

अनिच्छु वि. (तत्.) [अन्+इच्छु] किसी प्रकार की इच्छा न करने वाला, अनिच्छुक दे. अनिच्छ।

अनिच्छुक वि. (तत्.) इच्छा न रखनेवाला, अनभिलाषी, जिसे चाह न हो।

अनित्य वि. (तत्.) 1. जो हमेशा न हो, अस्थायी 2. नश्वर, नाशवान 3. जो एक-सा न रहे, सदा बदलता रहे 4. अनिश्चित, संदेहास्पद 5. (व्याकरण) जो अनिवार्य न होकर वैकल्पिक हो।

अनित्यकर्म पुं. (तत्.) 1. घर में एक निश्चित समय में किया जाने वाला वह कार्य जो नित्य कर्म से भिन्न हो जैसे- हवन-यज्ञ-दानादि कार्य। 2. वह कर्म जो नियमित रूप से न होकर कभी कभी किया जाए।

अनित्यक्रिया स्त्री. (तत्.) वह क्रिया-कर्म जो नित्य न किया जाए, अनित्यकर्म।

अनित्यता स्त्री. (तत्.) अनित्य अवस्था, अस्थिरता, क्षणभंगुरता, नश्वरता।

अनित्यभाव पुं. (तत्.) 1. वह भाव जो सदा स्थिर न रहे, अस्थायी 2. सदा न रहने वाला भाव, अनित्यता 3. मानव मन में उत्पन्न होने वाले, प्रेम, दया, श्रद्धा, क्रोधादि भावों की अनित्यता, अस्थिरता।

अनिदान वि. (तत्.) [अ+निदान] 1. जिस बात या समस्या आदि का कोई निदान (उपाय) संभव न हो 2. पुं. 1. निदान का अभाव 2. कारण ज्ञात न होना।

अनिदेशात्मक वि. (तत्.) [अ+निदेशात्मक] 1. जिसके बारे में कोई निदेश न दिया गया हो 2. जिसमें किसी प्रकार के निर्देशन का अभाव हो जैसे- अनिदेशात्मक कार्यशाला।